Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 25 April 2018 01:17

: □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□, □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ : □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□, □ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ : □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□-□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□ : दोस्तों मेरे कई पाठकों ने मेरी राय पर बहुत गुस्सा जाहरि कयिा है कई ने तो यहां तक कह दयिा क अिगर ऐसा हादसा अगर आप के परवािर की महलिाओं पर हो तो आपका नजरयिा क्या होगा उनका गुस्सा बलि्कुल जायज है लेकनि यह केवल उनका गुस्सा ही है, जबक ऐिसे मामलों पर शांतचति्त मस्तषि्क से ही फैसला करना चाहएि गुस्सा यानी आक्रोश में लएि गए फैसले हमेशा आत्मघाती होते हैं और उनका काफी दूरगामी प्रतकिूल असर पड़ता है इस मामले में भी यही हुआ है ऐसी हालत में हमें देखना पड़ेगा क अिचानक ऐसा कौन सी घनिौनी आंधी कैसे चल पड़ी, उसके मूल क्या कारण हैं, उसके पीछे कौन सी ताकतें है और उसके मूल अपराधी कौन हैं

क्या इसके पहले समाजवादी पार्टी यह दलि्ली समेत कसिी और क्षेत्र में ऐसी कोई घटना नहीं हुई हुई हैं, और खूब हुई हैं आज ही नहीं बल्क हिर युग में हुई महाभारत की शुरुआती पॉक्सो जैसे हालातों से पैदा हुई थी आप याद कीजएि क निषिाद राज की पुत्री सत्यवती जसिकी उम्र तकरीबन 16 बरस की थी, उसके साथ ऋषपिाराशर ने संभोग कयिा था वह कृत्य तब हुआ जब वह बच्ची उस ऋषकिो नाव पर बठिाकर नदी के उस पार ले जा रही थी पाराशर ने उस पूरे यात्रा के दौरान एक धुंध-कोहरा जैसा बुन-बींध दयिा था और आपको कहने की जरूरत नहीं है क कोिहरा का आशय उस घटना में कसि व्यवहार का प्रतीक था

कुंती के पुत्र का नाम कर्ण था कहा जाता है क वह कुंती के कान से पैदा हुआ था कर्ण इतना तय है क उसके जैवकि पतिा का नाम सूरज था हम नहीं जानते क वह सूरज कोई व्यक्ति था या नहीं अथवा दहकते आग का सूरज था वह, लेकनि इतना जरूर है क कसिी भी बच्चे का जन्म कसिी स्त्री के कान से नहीं हो सकता इसके पहले राम काल में शूर्णपखा नामक एक युवती के नाक और कान काट लयिा गया था और आपको समझने की जरूरत नहीं है क कसिी महलिा की नाक-कान काट लेना कसि प्रवृत्त या काण्ड का प्रतीक और कनि परसि्थतियिों का परचियािक होता है

तो हमें भ्रमति मत कीजएि आइये, कम से कम हम शांतचति्त होकर इस पूरे प्रकरण को समझने की ईमानदारी को दखिायें

हमें समझना पड़ेगा क आिखरि क्या कारण थे जनिमें अखलिेश यादव की सरकार में बलात्कारों की एक बाढ़ तक आ गई थी और पूरे 5 बरस तक अखलिेश सरकार बलात्कारयिों की सरकार के तौर पर को कुख्यात हो गई थी हालत इतनी बुरी हो गई थी क प्रदेश की पीड़ति जनता के दलिों पर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष रहे मुलायम सहि यादव ने इतना तक मरिच झोंक दयिा था क लिड़कों से गलतयिां हो जाती हैं, और इसका मतलब नहीं क उन्हें फांसी पर चढ़ा दयिा गया वहां मुलायम सहि यादव अपने इस बयान पर भले ही फांसी शब्द का दूसरी व्याख्या कर रहे हों लेकनि इतना जरूर है क उस बयान से इतना जरूर साबति हो गया क उनकी सोच बलात्कारी लड़कों के प्रतक्या है

सतयुग हो या सपा-भाजपा सरकार : सिर्फ पॉक्सो ही पॉक्सो

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 25 April 2018 01:17

नतीजा यह हुआ कि अखिलेश की सरकार के प्रति आम आदमी को घृणा हो गयी।

सपा सुप्रीमो मुलायम सिंह यादव ने अपने उस बयान से पीड़ित जनता के घावों पर मल्हम तो नहीं लगाया, बल्कि उसे और भी कुरेद दिया था। बेहतर होता कि मुलायम सिंह अपने प्रशासन को और संवेदनशील बनाते और ऐसे अपराधियों पर कड़ी कार्रवाई करते हुए समाज विज्ञानियों से आग्रह करते ताकि ऐसे जघन्य हरकतों का निदान खोजा जा सके। इसके साथ ही साथ वे प्रदेश में एक बहस छेड़ते कि राजसत्ता को ऐसे तांडवों से कैसे निपटना चाहिए।

अखिलेश सरकार को राजगद्दी से बाहर करने और पदस्थ कर सत्ता पर हासिल करने वाली भाजपा सरकार ने इस ताजा तांडव पर जो भी फैसला किया, उस पर गुण-दोष की समीक्षा करना समय की सख्त जरूरत है। यहां सवाल यह नहीं है कि किसी अपराधी पर क्या सजा दी जाए, बल्कि सवाल यह है कि जनता को विश्वास में लेकर जो भी हो सके, फैसला किया जाए वह सर्वमान्य हो।

किसी भी मामले पर क्रूरतम सजा देने के फैसला देना भावुकता का विषय कैसे हो सकता है। सच तो यह है कि यह प्रश्न का समाधान तो सरकार और समाज की संवेदनशीलता से ही खोजा जा सकता है। और दुख की बात है कि सरकार ने इस पूरे प्रकरण पर पूरी तरह आम आदमी की भावुकताओं को सान पर चढ़ाया है, मगर अपनी संवेदनशीलता का एक बार भी प्रदर्शन नहीं किया। **(क्रमश:)**

इधर नन्हीं बच्चियों के साथ हुई बलात्कार के बाद हत्याओं की आंधियों ने साबित करने की यह मजबूत पैरवी शुरू कर दी है कि हमारा देश एक अराजक समाज की शक्ल अख्तियार करता रहा है। लेकिन इसके पहले कि इस मामले पर कोई सार्थक राष्ट्रीय बहस हो पाती, सरकार ने उन हादसों से भड़कीं जन-भावनाओं पर जो फैसला किया, वह किसी भी सभ्य देश को सवालों के कठघरे में खड़ा कर देता है। बहरहाल, इस पर हम एक श्रंखलाबद्ध लेख प्रकाशित करने जा रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि हमारे इस अभियान पर आप भी जुड़ें और खुद भी अपनी राय व्यक्त करें। आपकी भावनाओं को हम पूरे सम्मान के साथ अपने प्रख्यात न्यूज पोर्टल **www.meribitiya.com** पर प्रकाशित करेंगे। अपनी राय आप हमारे ईमेल **kumarsauvir@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

इस सीरीज की अगली कड़ियों को पढ़ने में यदि इच्छुक हों तो कृपया निम्न लिंक पर क्लिक कीजिएगा:-

रेप पर रेप्चर्ड फैसला

2 / 2